भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल- III)

(जैव भूगोल, प्रादेशिक आयोजना, आर्थिक भूगोल, पर्यावरण भूगोल और जनसंख्या एवं बस्ती भूगोल)

DTVF/18(JS)–OPS–G3

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): सुनिल कुमार धनवन्ना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03 / 03-07-2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

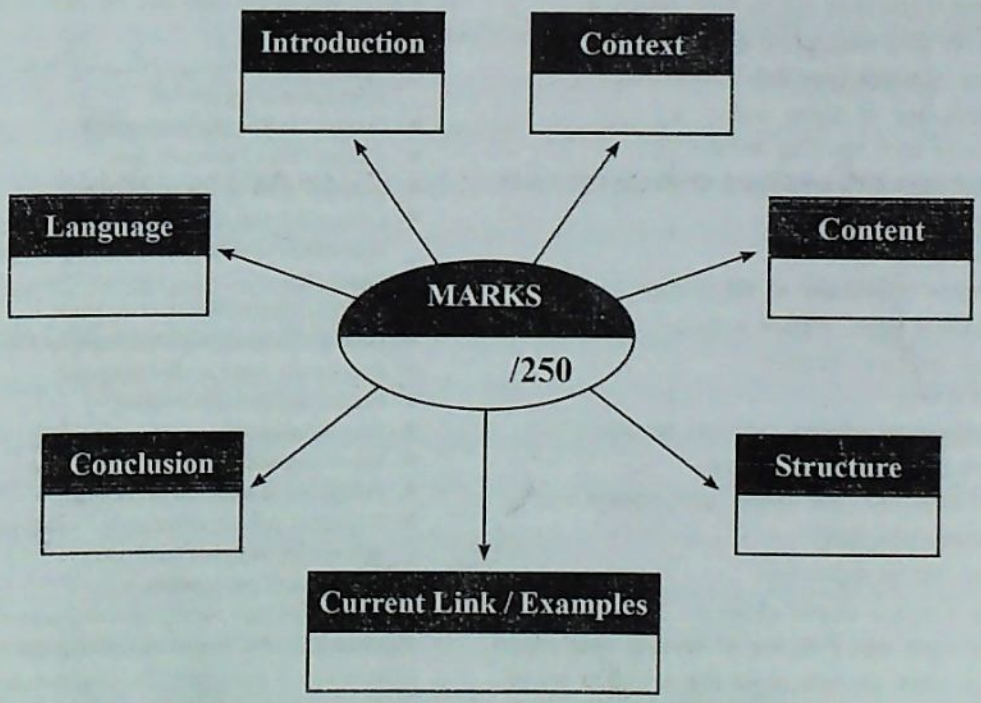

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

दृष्टि The Vision

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियो,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्याकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

   Answer the following in about 150 words each:

   (a) मैकनाटन एवं उल्फ द्वारा उल्लेखित 'पारिस्थितिक निचे' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

   Elucidate the characteristics of 'ecological niche' propounded by McNaughton and Ulf.

किसी जीव की आवासीय एवं कार्यात्मक दशाओं को दर्शाने वाले स्थान को उसका निकेत कहते हैं।

निशेषताएँ

(i) प्रत्येक जीव का निकेत अलग-अलग होता है

(ii) यह जीव के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

(iii) जीव के प्राकृतिक आवास की जानकारी देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) विकासशील देशों में प्रादेशिक नियोजन प्रक्रिया का अभाव के कारणों की चर्चा कीजिये।
Discuss the reasons behind lack of regional planning in developing countries.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकासशील देशों में प्रादेशिक नियोजन की प्रक्रिया को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता है। इसके पीछे अनेक भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक कारक जिम्मेदार हैं।

कारण -

(i) पूंजी का अभाव - इसके कारण इन देशों में अनेक क्षेत्र पिछड़े रह जाते हैं।

(ii) शोध एवं अनुसंधान का अभाव - इन देशों में प्रादेशिक नियोजन की दिशा में शोध का निम्न स्तर पाया जाता है।

(iii) राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी एवं भ्रष्टाचार

(iv) संसाधनों की सीमित उपलब्धता - कई विकासशील देशों में जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों की मात्रा सीमित होती है।

(v) पर्याप्त नीति एवं रणनीति का अभाव

(vi) लोगों की जागरूकता का निम्न स्तर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ वैश्विक स्तर पर कुछ विकसित विधियों का अध्ययन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) जनसंख्या के अंकगणितीय घनत्व एवं इसके मौलिक दोषों की व्याख्या कीजिये।
Explain the arithmetic density of the population and its fundamental defects.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या में उसके क्षेत्रफल से भाग देने पर जनसंख्या का ~~अंकगणितीय~~ अंकगणितीय घनत्व प्राप्त होता है।

$$\text{अंकगणितीय घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{भौगोलिक क्षेत्रफल (km}^2\text{)}}$$

मौलिक दोष

(क) जनसंख्या के वितरण के बारे में अस्पष्टता -

किसी क्षेत्र में कई स्थानों पर ज्यादा जनसंख्या जबकि कुछ स्थानों पर कम जनसंख्या पाई जाती है। जैसे भारत का जनघनत्व 382 व्यक्ति/km^2 है ~~[illegible]~~ परन्तु थार के मरुस्थल में यह 13 तथा दिल्ली में 11000 है।

(ख) संसाधनों व जनसंख्या के संबन्ध में जानकारी नहीं।

किसी क्षेत्र में जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए उपलब्ध भूमि की कोई जानकारी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नहीं

अतः इसके स्थान पर कायिक घनत्व

का इस्तेमाल करना चाहिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) विकसित देशों में ग्रामीण और नगरीय लिंग-अनुपातों में भिन्नता की कारणों सहित चर्चा कीजिये।
Discuss the reasons for the difference in rural and urban sex-ratios of the developed countries.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंगानुपात = महिलाओं की कुल जनसंख्या / पुरुषों की कुल जनसंख्या × 1000

विकसित देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में कम लिंगानुपात जबकि नगरीय क्षेत्रों में अधिक लिंगानुपात पाया जाता है।

कारण -

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य केवल पुरुषों का व्यवसाय है अतः वे शहरों की ओर कम प्रवास करते हैं।

(ii) शहरों में महिलाओं के लिए रोजगार की पर्याप्त उपलब्धता के कारण बड़ी संख्या में महिलाओं का शहरों की ओर प्रवास होता है।

(iii) शहरों में महिलाओं के लिए जीवन की गुणवत्ता व उपलब्ध दशाएँ अनुकूल होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) शहरों में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में का निम्न स्तर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) पोडजोल एवं लेटराइट मृदा के लक्षणों में समानता के तत्त्वों को स्पष्ट कीजिये।
Explain the characteristic similarity of podzoles and laterite soil.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~पोडजोल~~

समानता के तत्व -

(i) दोनों में वर्षा के कारण पोषक तत्वों व ह्यूमस का निक्षालन हो जाता है।

(ii) दोनों में पोषक तत्वों की मात्रा कम पायी जाती है।

(iii) दोनों कम उपजाऊ होती है क्योंकि पोषक तत्वों का निक्षालन हो जाता है।

(iv) दोनों में कृषि कम मात्रा में की जाती है तथा कृषि करने के लिए उर्वरकों की आवश्यकता होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) औद्योगिक-व्यापारिक अर्थव्यवस्था तथा औद्योगिक-कृषीय अर्थव्यवस्था के लाक्षणिक विशेषताओं में अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

Differentiate between the characteristics of industrial-trade and industrial-agricultural economy. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास के स्तर एवं अर्थव्यवस्था की संरचना के आधार पर विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को अनेक वर्गों में विभाजित किया गया है।

(a) औद्योगिक - व्यापारिक अर्थव्यवस्था की लाक्षणिक विशेषताएँ

- ये उच्च आर्थिक एवं सामाजिक विकास वाली अर्थव्यवस्थाएँ होती हैं।

(i) यहाँ प्रति व्यक्ति आय का उच्च स्तर पाया जाता है।

(ii) साक्षरता की उच्च दर

(iii) उपभोक्तावादी संस्कृति

(iv) अधिकांश जनसंख्या द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसायों में संलग्न रहती है

(v) ० सकल घरेलु उत्पाद में उद्योगों एवं सेवाओं का योगदान ज्यादा जबकि कृषि का योगदान अत्यन्त कम होता है

(vi) यहाँ किसानों की आर्थिक दशा अच्छी होती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं तथा वे वैज्ञानिक विधियों से कृषि करते हैं।

(vii) कुशल श्रमिकों की संख्या बहुत ज्यादा होती है।

(viii) गरीबी, कुपोषण एवं भुखमरी का स्तर अत्यन्त कम होता है।

इनके अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, पश्चिमी यूरोपीय देश, जापान, आस्ट्रेलिया, रूस, न्यूजीलैण्ड आदि देश आते हैं।

औद्योगिक-कृषीय अर्थव्यवस्था की लाक्षणिक विशेषताएं-

(i) प्रति व्यक्ति आय का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।

(ii) साक्षरता की अपेक्षाकृत कम दर

(iii) जनसंख्या का बड़ा भाग द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं में संलग्न रहता है परन्तु कृषि कार्य भी व्यापक स्तर पर किया जाता है।

(iv) G.D.P में कृषि का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन देशों में मुख्य रूप से चीन, भारत, मलेशिया, ब्राजील, दक्षिणी अफ्रीका इत्यादि देश शामिल किए जाते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि पेनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में अनेक लाक्षणिक अन्तर पाएँ जाते हैं जो इनके आर्थिक एवं सामाजिक स्तर को निर्धारित करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) यद्यपि प्रजनन क्षमता एक जैविक तत्त्व है फिर भी प्रजननता के निर्धारण में सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। चर्चा करें। 20

Although fertility is a biological trait, the socio-cultural factors play an important role in determining fertility. Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जीवों में संतान उत्पन्न करने की क्षमता को प्रजनन क्षमता कहा जाता है। एक महिला द्वारा अपने प्रजनन काल के दौरान पैदा कि० गए औसत बच्चों की संख्या को प्रजनन दर की संज्ञा दी जाती है।

प्रजनन क्षमता मनुष्य की आयु, जैविक • प्रकृति, संबन्धों की प्रकृति इत्यादि जैविक तत्वों पर निर्भर करती है।

मनुष्य में बच्चे पैदा करने की क्षमता युवावस्था के दौरान ज्यादा होती है जो उम्र के बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती जाती है। अतः युवा जनसंख्या वाले देश की प्रजनन क्षमता को सामान्यतया ज्यादा माना जाता है।

इसी के साथ ही मनुष्य के स्वास्थ्य की स्थिति, पोषण की स्थिति इत्यादि भी प्रजनन क्षमता को प्रभावित करती है। यदि मनुष्य किसी बीमारी जो प्रजनन से संबन्धित हो, से पीड़ित हो तो उसकी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रजनन क्षमता कम हो जाती है।

इस प्रकार जैविक तत्व ~~प्रजनन~~ प्रजनन क्षमता को निर्धारित करते हैं परन्तु अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि सामाजिक- सांस्कृतिक तत्व भी प्रजनन क्षमता को प्रभावित करते हैं।

इन तत्वों में समाज की संरचना, धर्म की प्रकृति, सामाजिक प्रथाएं, ~~लोगों~~ लोगों की मानसिकताएं इत्यादि प्रजनन क्षमता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विश्व के अलग-अलग धर्मों में बच्चे पैदा करने संबन्धी अनेक मत पाए जाते हैं। जैसे हिन्दू धर्म में बड़े परिवार को काफी महत्व दिया जाता है वहीं ईसाई, पारसी धर्मों में छोटे परिवार को महत्व दिया जाता है।

इसी के साथ कई धर्मों में पुत्र को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता है अतः पुत्र प्राप्ति तक वे सन्तान पैदा करते रहते हैं जिससे अवांछित लड़कियों की संख्या बढ़ जाती है। क्लार्क महोदय ने मार्क्स की आलोचना करते हुए धर्म को जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारक माना है।

इसी के साथ समाज की संरचना अर्थात् पितृसत्तात्मक समाज या मातृसत्तात्मक समाज इत्यादि भी प्रजनन क्षमता को प्रभावित करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि न सिर्फ जैविक तत्व अपितु सामाजिक सांस्कृतिक कारक भी प्रजनन क्षमता को काफी हद तक प्रभावित करने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मृदा अपरदन समस्या की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिये। 15
Discuss in detail the problem of soil erosion in the tropical areas. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनेक प्राकृतिक एवं मानवीय क्रियाओं के फलस्वरूप मृदा की ऊपरी परत का विनाश तथा मृदा की उपजाऊ क्षमता में कमी को मृदा अपरदन की संज्ञा दी जाती है।

मृदा अपरदन उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर पाया जाता है जिसके निम्न कारण है।

(क) प्राकृतिक कारक –

(i) इन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा ज्यादा होने से मृदा की ऊपरी परत को जल बहाकर ले जाता है।

(ii) इन क्षेत्रों में उपस्थित मरुस्थलों में वायु द्वारा मृदा की ऊपरी परत का विनाश किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मानवीय कारक-

(i) वनों का विनाश- वनों के विनाश के कारण मृदा की ऊपरी परत असंगठित हो गई है जिसमें जल उसको आसानी से बहा ले जाता है।

(ii) अतिचारण की समस्या- इसके कारण पशुओं के पैरों तथा घास की कमी के कारण मृदा ढीली हो जाती है जो जल एवं मृदा प्रदूषण के प्रति ज्यादा प्रवण होती है

(iii) कृषि कार्यों में रासायनिक उर्वरकों के ज्यादा प्रयोग से मृदा भुरभुरी हो जाती है जिससे जल द्वारा उसका आसानी से अपरदन हो जाता है।

(iv) कृषि की गलत पद्धतियों जैसे एक फसली कृषि, ढलान की दिशा में जुताई इत्यादि के कारण भी मृदा अपरदन हो रहा है।

मृदा प्रदूषण के दुष्प्रभाव-

(i) भूमि की उपजाऊ क्षमता में कमी

(ii) खाद्यान्न उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव → खाद्य संकट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपाय-

(i) वृक्षारोपण।
(ii) चराई को नियंत्रित करना
(iii) कृषि में उचित तरीकों जैसे समोच्चरेखीय जुताई, 'जीरो टिलेज फार्मिंग', उर्वरकों का संतुलित उपयोग

इस प्रकार अर्युक्त उपायों के द्वारा मृदा अपरदन की समस्या पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है जिसमे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) "नगरीकरण और औद्योगीकरण का सर्वाधिक नकारात्मक पक्ष पर्यावरणीय अवनयन है" कथन के आलोक में पर्यावरण प्रबंधन हेतु भविष्यगामी उपायों पर चर्चा करें। 15

"The most negative aspect of urbanization and industrialization is Environmental degradation." Discuss the measures taken in future for environmental management in context of statement. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक काल में मानव ग्रामीण आवासों में निवास करता था परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात नगरीकरण की दर में तीव्र वृद्धि हुई।

जहाँ सन् 1900 ईस्वी में नगरीकरण का स्तर वैश्विक स्तर पर 2.5% था वहीं वर्तमान में यह बढ़कर 55% हो चुका है।

नगरीकरण के कारण लोगों के रोजगार, जीवन स्तर, आर्थिक स्तर इत्यादि में वृद्धि हुई है परन्तु इसने अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म भी दिया है।

नगरीकरण से पर्यावरणीय अवनयन :

(i) वाहनों की अत्यधिक संख्या के कारण वायुमण्डलीय ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या

(ii) शहरी ऊष्मा द्वीप का निर्माण

(iii) भूजल के स्तर में कमी तथा उसका प्रदूषण

(iv) नगरपालिका अपशिष्ट से भूमि एवं जल प्रदूषण

(v) मलिन बस्तियों का विकास

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण अवनयन-

(i) उद्योगों से निकले धुआं के कारण वायु प्रदूषण
(ii) भारी धातुओं के विसर्जन से जल प्रदूषण
(iii) सुपोषण की समस्या
(iv) अपशिष्ट जल एवं गर्म जल के विसर्जन से जलीय पारिस्थितिकी को हानि

उपर्युक्त प्रभावों के अलावा औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण अनेक प्रभाव पर्यावरण पर पड़े हैं। अतः इन प्रभावों को कम करने तथा मानव जीवन को स्वस्थ बनाने के लिए पर्यावरण का प्रबन्धन करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण प्रबन्धन के अंतर्गत समस्याओं को समझकर उनके कारणों का पता लगाया जाता है तथा उसके समाधानों को खोजने का प्रयास किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाता है

इस प्रकार इन समस्याओं के समाधान निम्नलिखित भविष्यगामी उपाय किए जाने चाहिए-

(i) नगरों का संपोषणीय नियोजन किया जाना चाहिए

(ii) नगरों में स्वच्छ ईंधन का प्रयोग तथा सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता

(iii) मलिन बस्तियों के पुनर्वास पर बल

(iv) ठोस अपशिष्टों व सीवेज का शोधन करने के बाद ही फेंकना

(v) उद्योगों में उन्नत मशीनों का प्रयोग कर तथा प्रदूषण अवशोषकों का प्रयोग किया जाना चाहिए

(vi) जल के पुनर्चक्रण पर बल

इस प्रकार उपर्युक्त उपायों के माध्यम से पर्यावरण पर नगरीकरण एवं औद्योगीकरण को कम किया जा सकता है। UN हैबिटेट सम्मेलन, भारत की स्मार्ट शहर योजना, टेरी द्वारा 'GRIHA' ~~[illegible]~~ रेटिंग, पेरिस सम्मेलन इत्यादि इस दिशा में सराहनीय प्रयास हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) प्रादेशिक विकास के आयामों की विवेचना कीजिये। साथ ही, प्रादेशिक आयोजना की वर्तमान प्रवृत्ति को भी स्पष्ट कीजिये। 15

Discuss the dimensions of regional development. Also explain the current trend of regional planning. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी प्रदेश के विकास के लिए अपनायी जाने वाली विभिन्न रणनीतियों को प्रादेशिक विकास के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

प्रादेशिक विकास के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं -

(क) प्रदेश की समस्याओं की पहचान - विचारणीय प्रदेश में उपस्थित आर्थिक, व राजनैतिक, सामाजिक व अन्य समस्याओं की पहचान की जानी चाहिए

(ख) उपर्युक्त समस्याओं के पीछे जिम्मेदार कारकों की पहचान की जानी चाहिए

(ग) उस प्रदेश में उपस्थित सभी संसाधनों का उचित आँकलन किया जाना चाहिए

(घ) प्रदेश की समस्याओं व उपलब्ध संसाधनों के आधार पर समुचित योजना का निर्माण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) योजना का सभी स्तरों पर उचित कार्यान्वयन जिसमें सभी पक्षों की पर्याप्त भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए

(घ) परिणामों की समीक्षा का नीति एवं योजना में पर्याप्त सुधार करना चाहिए।

प्रादेशिक आयोजना की वर्तमान प्रवृत्ति

भारत में 2nd पंचवर्षीय योजना के दौरान क्षेत्रीय विकास पर ध्यान दिया गया तथा अनेक भारी उद्योगों की स्थापना की गई। यह **महालनॉबिस मॉडल** पर आधारित योजना थी।

वर्तमान में जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, वाटरशेड विकास कार्यक्रम, पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम, द्वीपीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम इत्यादि के माध्यम से प्रादेशिक विकास पर बल दिया जा रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम में अनुसूचित जनजातियों के लिए अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है जिसमें वन धन योजना, रोशनी, मनरेगा, इत्यादि प्रमुख हैं।

पहाड़ी क्षेत्रों के समुचित विकास के लिए पहाड़ी क्षेत्र विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

लक्षद्वीप, अंडमान एवं निकोबार इत्यादि द्वीपों के विकास के लिए द्वीपीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

अतः स्पष्ट है कि वर्तमान में अनेक क्षेत्र आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से प्रादेशिक विकास पर बल दिया जा रहा है ताकि प्रादेशिक संतुलन की स्थापना हो सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की कई आधारों पर आलोचना के बावजूद आज भी इसका महत्त्व है। कथन की व्याख्या कीजिये। 20

The population theory of Malthus, despite its criticisms on many grounds, still has relevance. Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनसंख्या के संबन्ध में कई विद्वानों ने अपने सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं परन्तु रॉबर्ट माल्थस के सिद्धान्त को एक अग्रगामी सिद्धान्त माना जाता है जिन्होंने जैविक तत्वों एवं प्राकृतिक तत्वों के आधार पर अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

माल्थस ने अपना सिद्धान्त 1798 ई. में अपने निबन्ध 'एन एसे ऑन पॉपुलेशन' में प्रस्तुत किया था।

सिद्धान्त की मान्यताएँ

(i) प्रकृति की संसाधन पैदा करने की दर कम है
(ii) मनुष्य की जनसंख्या पैदा करने की दर अपेक्षाकृत ज्यादा है।

माल्थस ने बताया कि प्रकृति में जीविकोपार्जन के साधनों की वृद्धि समान्तर श्रेणी अर्थात 1, 2, 3, 4, 5... के रूप में होती है।

वहीं मनुष्य की जनसंख्या वृद्धि गुणोत्तर श्रेणी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थात् 1, 2, 4, 8, 16, 32- - - - के रूप में होती है,

जनसंख्या एवं संसाधनों की मांग प्रारंभ में तो संतुलित रहती है परन्तु कुछ वर्षों बाद जनसंख्या संसाधनों से बहुत ज्यादा हो जाती है। उनके बीच यह अन्तराल प्रतिवर्ष बढ़ता ही जाता है।

इसी के आधार पर माल्थस ने दो प्रकार के निरोधों की चर्चा की -

(i) सकारात्मक निरोध (Positive checks)- इसमें प्रकृति बाढ़, सूखा, महामारी, भूकंप, ज्वालामुखी इत्यादि के द्वारा जनसंख्या पर नियंत्रण का प्रयास करती है।

(ii) निवारात्मक निरोध (Preventive checks) - इसमें मानव द्वारा जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। इन निरोधों में गर्भनिरोधक, देर से शादी करना, संयम रखना, ब्रह्मचर्य का पालन करना इत्यादि प्रमुख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः माल्थस ने जनसंख्या की वृद्धि तथा संसाधनों अर्थात् जीविकोपार्जन के साधनों के मध्य संबन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। इन्होंने वैश्विक समुदाय को जनसंख्या पर नियंत्रण करने के लिए प्रेरित किया।

प्रारंभ में इस सिद्धान्त को काफी सराहना मिली परन्तु बाद में अनेक विद्वानों द्वारा इसकी आलोचना की गई -

(i) सेक्स करना हमेशा बच्चे पैदा करने से संबन्धित नहीं होता यह तो एक प्राकृतिक क्रिया है।

(ii) तकनीकी विकास द्वारा संसाधनों को बढ़ाया जा सकता है।

(iii) गर्भनिरोधन के द्वारा जनसंख्या पर काफी नियंत्रण किया जा सकता है।

(iv) ~~मार्क्स~~ माल्थस ने पूंजीवाद को जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण बताया है।

परन्तु उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद माल्थस का सिद्धान्त लोगों को जनसंख्या वृद्धि के बारे में जागरूक करने में सफल रहा है तथा आज भी प्रासंगिक है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख/ SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) टैगा वन का वैश्विक वितरण, विशेषताएँ एवं उनके आर्थिक महत्त्व की विवेचना कीजिये।
Discuss the global distribution, characteristics and economic importance of Taiga forests.

टैगा वन पृथ्वी पर लगभग 45°-65° अक्षांशों के मध्य पाए जाते हैं ये वन मुख्यतया: उत्तरी कनाडा, अलास्का, साइबेरिया, उत्तरी यूरोप, चिली इत्यादि में पाए जाते हैं

टैगा वनों की विशेषताएँ

(i) इनके वृक्षों का आकार शंक्वाकार होता है ताकि बर्फबारी से इनकी रक्षा हो सके

(ii) वाष्पोत्सर्जन को कम करने के लिए पत्तियाँ नुकीली होती हैं

(iii) ये हमेशा हरे-भरे रहते हैं इसलिए इन्हें सदाबहार वन भी कहते हैं

(iv) इनकी लकड़ी मुलायम प्रकृति की होती है

(v) एक ही प्रजाति के वृक्ष काफी बड़े क्षेत्र में पाए जाते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) प्रमुख वृक्ष - चीड़, देवदार, स्प्रूस, पाइन, इत्यादि

आर्थिक महत्व -

(i) लकड़ी के मुलायम होने के कारण कागज उद्योग में उपयोग

(ii) घरों में ईंधन के रूप में इस्तेमाल

(iii) फर्नीचर बनाने में प्रयोग

(iv) नाव एवं जहाज बनाने में प्रयोग क्योंकि ये हल्के होते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि टैगा वन आर्थिक दृष्टि से काफी उपयोगी है। कनाडा, साइबेरिया इत्यादि में इन पर आधारित उद्योग स्थापित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) प्रादेशिक असंतुलन के मापन हेतु प्रयुक्त चतुर्थक सूचकांक विधि की विवेचना कीजिये। इसे सबसे उत्तम विधि क्यों माना जाता है? स्पष्ट कीजिये।

Explain the quartile index method used for measuring regional imbalances. Why is it considered the best method? Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनेक प्रदेशों में विकास में व्याप्त असमानता प्रादेशिक असंतुलन कहलाता है। प्रादेशिक असंतुलन के मापन के लिए चतुर्थक विधि, दशमक विधि, अष्टमक विधि इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

चतुर्थक विधि -

(i) सर्वप्रथम प्रदेश के विकास के आँकड़ों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

(ii) फिर इन आंकड़ों को चार बराबर भागों में बांट लिया जाता है। ~~अर्थात [illegible]~~

जैसे यदि किसी प्रदेश में 10 आंकड़े हैं तो उसमें चार का भाग दिया जाता है।

→ N/4 यहाँ N आंकड़ों की संख्या है।

(iii) इसके बाद इन भागों की आपस में तुलना की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाती है।

चतुर्थक विधि के लाभ -

(i) यह आंकड़ों पर आधारित वैज्ञानिक विधि है

(ii) इसमें अनुमान के स्थान पर सांख्यिकी विश्लेषण का प्रयोग किया जाता है।

(iii) यह व्यक्तिनिष्ठ ना होकर वस्तुनिष्ठ होता है।

परन्तु इसमें मानवीय व्यवहार को कम महत्व दिया जाता है। फिर भी यह अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) विश्व में जनसंख्या वृद्धि के कालक्रम का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिये।

Give an account of the chronology of population growth of the world.

प्रागैतिहासिक काल ~~काल~~ के दौरान मानव के जन्म से लेकर आज तक जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि आती है परन्तु यह वृद्धि ~~समान~~ सभी कालों में एक जैसी नहीं रही।

इसलिए विश्व में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को कालक्रम के अनुसार निम्न भागों में बांटा जाता है

(क) प्रारंभिक काल- समाज पारंपरिक समाज था) इस दौरान जन्म दर व ~~उच्च~~ मृत्यु दर दोनों उच्च पायी जाती थी अतः जनसंख्या की वृद्धि दर अत्यन्त निम्न थी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

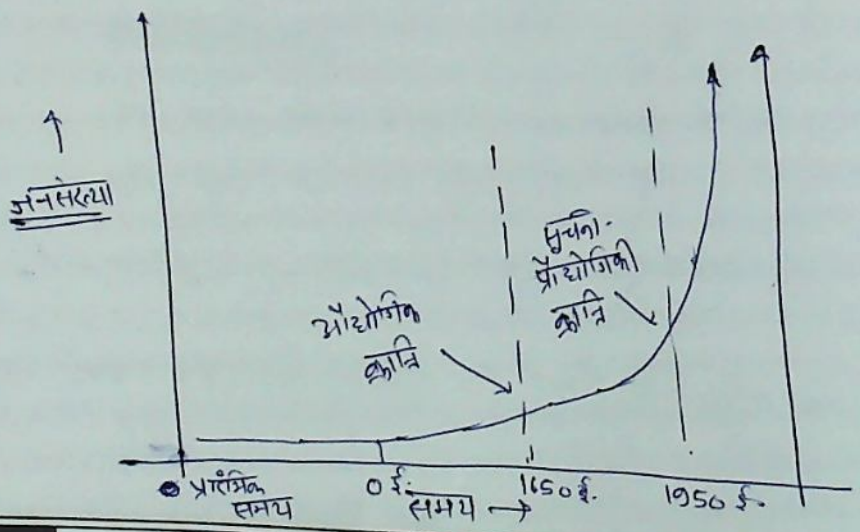

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) मध्यकाल - द्विवार्धी महोदय के अनुसार ईसा मसीह के जन्म के समय विश्व की जनसंख्या लगभग 13 करोड़ थी। जब 1650 ई. के आसपास औद्योगिक क्रांति आयी तो खाद्य सुरक्षा बढ़ी तथा मृत्यु दर पर नियंत्रण किया गया। इससे मृत्यु दर तो कम हो गई परन्तु जन्म दर उतनी ही रही अतः जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ने लगी और 1930 ई. में यह लगभग 200 करोड़ हो गई

(ग) वर्तमान काल (1950 के बाद)

सूचना - प्रौद्योगिकी क्रांति, टीकाकरण, महामारियों पर नियंत्रण इत्यादि के कारण मृत्यु दर कम हुई है। जन्म दर को भी कम कर लिया गया है। परन्तु जनसंख्या के आधार के विस्तृत होने के कारण थोड़ी सी वृद्धि भी बड़ी जनसंख्या को जन्म देती है

अतः स्पष्ट है कि विश्व जनसंख्या प्रारंभिक काल में स्थिर थी परन्तु औद्योगिक क्रांति के बाद यह निरन्तर वृद्धि की ओर है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) प्राकृतिक प्रदेश तथा सामाजिक-आर्थिक प्रदेश की सीमाओं का सदैव परस्पर तालमेल बना रहता है। स्पष्टीकरण कीजिये।

The limits of natural state and socio-economic state are always interdependent. Explain.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पृथ्वी पर उपस्थित विभिन्न समरूपताओं के आधार पर अनेक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रदेशों का निर्धारण किया जाता है।

प्राकृतिक प्रदेश तथा सामाजिक-आर्थिक प्रदेश की सीमाओं में तालमेल के कारण-

(i) आर्थिक विकास प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है अतः संसाधनों की भिन्नता के कारण आर्थिक विकास का स्तर भी अलग-अलग होता है जैसे मैदानी भागों व मरुस्थलीय प्रदेशों में आर्थिक विकास का स्तर अलग-अलग होता है।

(ii) पर्वत, पठार इत्यादि कभी-कभी दो संस्कृतियों को पृथक करते हैं तो वहाँ प्राकृतिक प्रदेशों एवं सामाजिक प्रदेशों में एक तालमेल दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) सामाजिक - आर्थिक विकास जलवायु पर भी निर्भर करता है अतः अलग - अलग जलवायु प्रदेशों में सामाजिक - आर्थिक विकास का स्तर भी अलग - अलग होता है। जैसे अल्प कटिबन्धीय जलवायु प्रदेशों एवं शीत कटिबन्धीय जलवायु प्रदेशों में सामाजिक - आर्थिक विकास का स्तर

(iv) मृदा एवं उच्चावच का सामाजिक - आर्थिक विकास पर प्रभाव

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राकृतिक कारक सामाजिक - आर्थिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करते है अतः इनके प्रदेशों की सीमाओं में परस्पर तालमेल बना रहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मरुस्थलीकरण के स्थलीय स्वरूप की विवेचना कीजिये। इसके समाधान के लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या प्रयास किये गए हैं? स्पष्ट कीजिये।

Explain the terrestrial nature of desertification. What efforts have been taken at international level to resolve this? Explain.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी प्रदेश की जैविक उत्पादकता में इतना ह्रास की वह मरुस्थल में परिवर्तित हो जाए तो इस प्रक्रिया को मरुस्थलीकरण कहते हैं।

मरुस्थलीकरण के कारण एवं स्वरूप

(i) उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में सन्मार्गी पवनों के कारण पश्चिमी भागों में वर्षा नहीं हो पाती अतः यहाँ मरुस्थल ज्यादा पाए जाते हैं।

(ii) मानव द्वारा वनों का निरन्तर विनाश करने के कारण मृदा अपरदन में वृद्धि हुई है तथा इसके फलस्वरूप मृदा उत्पादकता में ह्रास के कारण ये क्षेत्र मरुस्थल में बदल रहे हैं जैसे थार के मरुस्थल के आस-पास के क्षेत्र

(iii) अत्यधिक पशुचारण के कारण

(iv) रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक इस्तेमाल के

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारण

(v) वनों में आग के कारण

(vi) जलवायु परिवर्तन

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास -

(i) 1992 ई. में पृथ्वी सम्मेलन के दौरान UNCCD (United Nation Convention to Combat Desertification) का गठन किया गया

(ii) REDD एवं REDD+ कार्यक्रमों के अन्तर्गत वृक्षारोपण को बढ़ावा देने पर बल दिया गया।

(iii) खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा प्रतिवर्ष वनस्थिति की रिपोर्ट

(iv) सामाजिक वानिकी एवं कृषि वानिकी को प्रोत्साहन।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रयासों के अलावा समाज की भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है ताकि भूमि को मरुस्थल में बदलने से रोका जा सके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

6. (a) इंजीनियरी उद्योग में स्थानीयकरण के कारकों की विवेचना कीजिये तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में मोटर वाहन उद्योग के विकास के कारणों को स्पष्ट करें। 15

Discuss the localization factors of the engineering industry and highlight the reasons for the development of automotive industry in the United States. 15

इंजीनियरी उद्योग में इंजीनियरिंग तकनीक का प्रयोग कर व्यापक स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इस उद्योग के अन्तर्गत मोटर वाहन निर्माण उद्योग, घड़ी निर्माण उद्योग, वायुयान निर्माण उद्योग इत्यादि उद्योग शामिल किए जाते है।

इस उद्योग के स्थानीयकरण में अनेक प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक कारकों का योगदान होता है।

इस उद्योग हेतु कच्चा माल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस उद्योग के लिए अनेक छोटे-छोटे पुर्जों का प्रयोग किया जाता है। अतः इस उद्योग की स्थापना लौह इस्पात उद्योग के पास की जाती है।

पूंजी का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसकी स्थापना के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उद्योग को बड़े बाजार की आवश्यकता होती है, इसलिए उन बाजारों के पास भी इसकी स्थापना होती है जहाँ के उपभोक्ताओं की क्रय क्षमता अधिक हो। जैसे दिल्ली के पास कई मोटर वाहन उद्योग स्थापित किए गए हैं।

सस्ता श्रम भी पास ही उपलब्ध होना चाहिए। इसी के साथ ऊर्जा उपलब्धता, परिवहन के साधन इत्यादि भी इंजीनियरी उद्योग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका के डेट्रायट शहर तथा अन्य जगहों पर मोटरवाहन उद्योग की स्थापना हुई है जिसके निम्न प्रमुख कारण हैं-

(क) यहां लौह-इस्पात का उत्पादन काफी होता है अतः पुर्जे बनाने के लिए कच्चा माल आसानी से मिल जाता है

(ख) यहां बड़े-बड़े उद्योगपति रहते हैं जो आसानी से पूंजी उपलब्ध करवाते हैं, जैसे- हेनरी फोर्ड

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) इसी के साथ U.S.A का बाजार भी काफी क्रय क्षमता वाला है इसलिए इस उद्योग को व्यापक बाजार की उपलब्धता होती है।

(iii) अमेरिका में कुशल श्रमिकों की पर्याप्त उपलब्धता है।

(iv) इसी के साथ प्रचुर मात्रा में ऊर्जा उपलब्धता, शोध व अनुसंधान का ~~स्तर~~ उन्नत उन्नत स्तर भी काफी भूमिका निभाते हैं.

अतः कहा जा सकता है कि अमेरिका में मोटर वाहन उद्योग की स्थापना के बीजे सभी आवश्यक कारक मौजूद हैं। हालांकि अब बाकी देश भी इस उद्योग में काफी प्रगति कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) कृषि विकास ने बढ़ती खाद्यान्नों की मांग की पूर्ति तो कर दी किंतु घातक पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म दिया। स्पष्टीकरण कीजिये। 20

Agricultural development has fulfilled the increasing demand for foodgrains but engendered environmental problems. Explain. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खाद्यान्न मानव की प्रमुख मूलभूत आवश्यकता होता है। प्रारंभिक काल के दौरान मानव की जनसंख्या सीमित थी तथा खाद्यान्न के लिए वह वनोत्पादों एवं शिकार पर निर्भर था।

परन्तु बाद में जब जनसंख्या बढ़ी तो कृषि विकास प्रारंभ हुआ। जब औद्योगिक क्रान्ति के बाद जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई तो उस जनसंख्या की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि क्षेत्र में निम्न प्रयास किए गए-

(क) उन्नत बीजों का प्रयोग- परम्परागत बीजों के स्थान पर उन्नत प्रसंस्कृत बीजों का प्रयोग किया जाने लगा ताकि कम जगह पर ज्यादा उत्पादन प्राप्त किया जा सके। वर्तमान में 'जेनेटिकली मॉडिफाइड बीजों' के प्रयोग ने तो कृषि में क्रान्ति ला दी है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग - मिट्टी की पोषण क्षमता बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश जैसे रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया गया।

(ग) कीटनाशकों व खरपतवारनाशकों का प्रयोग - फसल को अनेक बीमारियों से बचाने तथा अनावश्यक खरपतवार के विनाश हेतु व्यापक स्तर पर कीटनाशकों व खरपतवारनाशकों का प्रयोग किया गया।

भारत में भी 1960 के दशक के दौरान हरित क्रांति के दौरान इन सभी उपायों का प्रयोग किया। इन उपायों ने खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाकर 2 गुना से ज्यादा कर दिया।

परन्तु इसी के साथ इसके निम्न पर्यावरणीय समस्याओं का भी जन्म हुआ -

(क) मृदा प्रदूषण - मृदा में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मृदा की प्राकृतिक पोषक क्षमता में कमी आयी है तथा मृदा बुरभुरी हो गई। एक अध्ययन के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुसार पंजाब में समान आगा में उत्पादन के लिए प्रतिवर्ष प्रति हेक्टेयर 10 किग्रा. 3. रासायनिक उर्वरक ज्यादा डालना पड़ता है।

(ख) भूमिगत व सतही जल प्रदूषण - 3 रासायनिकों उर्वरकों के भूमि में निक्षालन के कारण भूमिगत जल प्रदूषित हुआ है, साथ ही सतही जलस्त्रोतों में सुपोषण की समस्या हो गई है

(ग) पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है

(घ) कीटनाशकों के प्रयोग से अनेक पक्षियों की प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं

(ङ) खाद्य श्रंखला प्रदूषित हो गई है तथा मानव कई बीमारियों का शिकार होता जा रहा है

इस प्रकार स्पष्ट है कि कृषि विकास ने खाद्य सुरक्षा के द्वार तो खोल दिए हैं परन्तु इसके कारण पर्यावरण को गंभीर क्षति उठानी पड़ी है अतः हमें जैविक कृषि की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) विकास के स्तर पर प्रादेशिक एवं स्थानिक भिन्नता की चर्चा करते हुए इसके कारणों को स्पष्ट कीजिये। 15

Discuss the reasons behind regional and spatial variation of development. 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~विश्व के प्रत्येक भाग में~~

भारत की आय में वृद्धि तथा सामाजिक कल्याण में वृद्धि को विकास की संज्ञा दी जाती है। विकास अनेक भौगोलिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है।

अतः विकास के स्तर में प्रादेशिक एवं स्थानिक भिन्नता पायी जाती है। विश्व के कुछ प्रदेश विकसित जबकि कुछ प्रदेश अविकसित या अल्पविकसित देशों की श्रेणी में आते हैं-

विकसित प्रदेश - यहाँ प्रति व्यक्ति उच्च आय तथा सामाजिक विकास जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण इत्यादि का उच्च स्तर पाया जाता है। इनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोपीय प्रदेश, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड जैसे देश आते हैं।

विकासशील प्रदेश - ये मध्यम प्रकार के प्रदेश हैं जहाँ विकास का स्तर मध्यम प्रकार का होता है जैसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिंगापुर, भारत, चीन इत्यादि

अविकसित प्रदेश - यहाँ सामाजिक एवं आर्थिक विकास का अत्यन्त निम्न स्तर पाया जाता है। इनमें उप सहारा प्रदेश, विश्व के मरुस्थलीय प्रदेश इत्यादि प्रमुख है।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक -

(क) भौगोलिक कारक - इसमें जलवायु, उच्चावच, मृदा इत्यादि को शामिल किया जाता है। जिन प्रदेशों में जलवायु अनुकूल, समतल उच्चावच तथा उपजाऊ मृदा होती है वे सामान्यतया: ज्यादा विकसित होते है।

(ख) संसाधनों जिसमें प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों शामिल है, की उपलब्धता भी विकास को प्रभावित करती है।

(ग) तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का स्तर - उच्च प्रौद्योगिकी स्तर के देश संसाधनों का बेहतर प्रयोग कर पाते हैं अतः ज्यादा विकसित होते है, जैसे USA

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सामाजिक मान्यताएँ

(च) राजनैतिक संरचना पूँजीवादी या साम्यवादी

(छ) व्यापार- वाणिज्य का स्तर

इस प्रकार स्पष्ट है कि विकास के प्रादेशिक एवं स्थानिक स्तर को अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इससे प्रादेशिक असंतुलन का जन्म होता है जिसे दूर करने की आवश्यकता है।

कृपया इस स्थान म
कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल- III)

(जैव भूगोल, प्रादेशिक आयोजना, आर्थिक भूगोल, पर्यावरण भूगोल और जनसंख्या एवं बस्ती भूगोल)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

*इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा **हिन्दी एवं अंग्रेज़ी** भाषा में मुद्रित हैं।*

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

*प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright — Drishti The Vision Foundation